"दो चेहरे" नाटक में मानवाधिकार

डॉ. प्रीता रमणी टी.ई
असिस्टेंट प्रोफेसर
सरकारी महिला महाविद्यालय
तिरुवनंतपुरम

आज के चर्चित विषयों में से एक है मानवाधिकार, जिसका केन्द्रबिन्दु मानव - मूल्य है। मानवाधिकार की संकल्पना प्राचीन है जो मानव जीवन को विभिन्न रूपों से संरक्षण प्रदान करती है। मानवाधिकार से तात्पर्य उन सभी अधिकारों से हैं, जो व्यक्ति के जीवन, स्वतंत्रता, समानता एवं प्रतिष्ठा से जुडे हुए हैं। डॉ. जयराम उपाध्याय के अनुसार ""मानव अधिकार वे न्यूनतम अधिकार हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यक रूप से प्राप्त होना चाहिए क्योंकि वह मानव - परिवार का सदस्य है।""1 यह मनुष्य का मूलभूत सार्वभौमिक अधिकार है जिससे उसको जाति, धर्म, राष्ट्रीयता, लिंग आदि के आधार पर वंचित नहीं किया जा सकता। समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की भावना जागृत किए बिना मानवाधिकार के वास्तविक लक्ष्य को नहीं प्राप्त किया जा सकता। अतः वे सारे अधिकार जो व्यक्ति के स्वतंत्र एवं समान अस्तित्व और विकास का पोषण करते हैं, उन्हें मानवाधिकार कहते हैं।

बालशोषण, नारी शोषण, धार्मिक अस्पसंख्यकों का उत्पीडन, जातिगत भेदभाव, दलितों पर अत्याचार, जेल में कैदियों की अमानवीय स्थिति, बलात्कार आदि मानवाधिकार के खिलाफ की बातें हैं। दलित लोग हिन्दू समाज-व्यवस्था में सबसे निचले पायदान पर आते हैं। इसलिए उन्हें न्याय, शिक्षा, समानता, स्वतंत्रता आदि मौलिक अधिकारों से वंचित रखा गया था। अतः समाज की मुख्यधारा से बहिष्कृत लोग हैं दलित। दलितों के जीवन और उनकी समस्याओं पर लिखा गया साहित्य है दलित साहित्य। वर्तमान में दलित साहित्यकार सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं को चुनौती देते हुए साहित्य-सृजन में प्रवृत्त हैं।

दलित साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर ओमप्रकाश वाल्मीकिजी ने कविता, कहानी, आत्मकथा, नाटक, आलोचना आदि के द्वारा हिन्दी दलित साहित्य को समृद्ध किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा सदियों से चली आ रही अस्पृश्यता की परंपरा, पीडा, शोषण, अपमान, अन्याय आदि से दलितों को मुक्त करने केलिए और उनमें अपने अधिकारों के प्रति नवीन चेतना जगाने केलिए कोशिश की है। उनकी रचनाएँ मानवाधिकार की माँग केलिए संघर्षरत हैं।

मज़दूरों और मज़दूर संगठनों के आपसी संबन्ध एवं अंतर्विरोधों को केन्द्र में रखकर लिखा गया ओमप्रकाश वाल्मीकि का नाटक है "दो चेहरे"। इसमें एक ओर शहर के कारखानों के मज़दूरों की समस्या का चित्रण हुआ है और दूसरी ओर ग्रामीण परिवेश में खेतिहर मज़दूरों की समस्या का चित्रण हुआ है। सवर्ण लोग किस तरह गरीब दलितों का शोषण करके उनके अधिकारों का हनन करते हैं, उसका सजीव चित्र इस नाटक में खीच गया है।

"दो चेहरे" नाटक में वाल्मीकिजी ने मज़दूर यूनियन के नेता शिवराजसिंह के छद्म नेतृत्व की पोल खोलने की कोशिश की है। शहर के कारखाने के मज़दूर यूनियन के नेता शिवराजसिंह मज़दूरों को बचाने की कोशिश करता है। लेकिन यही शिवराजसिंह गाँव में गरीब दलित मज़दूरों के खिलाफ खडे होकर उनके शोषण केलिए तैयार हो जाता है। गाँव के मज़दूर अपना वेतन बढाने की माँग की पूर्ति केलिए और अन्याय एवं शोषण से मुक्ति पाने केलिए फसल काटना बन्द करके हड़ताल के द्वारा अपना विरोध प्रकट करते हैं तो गाँव के प्रधानजी और अन्य किसानों के साथ मिलकर शिवराजसिंह भी उनके खिलाफ कार्य करता है। वह दलितों की एकता की शक्ति को दुर्बल बनाकर हड़ताल को तोड़ने का षड्यंत्र रचता है।

दलितों में भिन्नता का भाव लाने केलिए शिवराजसिंह दलित मज़दूर किशन को अपने साथ मिलाने की बात करता है और उसको शहर के कारखाने में नौकरी दिलाने की बात भी करता है। लेकिन किशन ने यह समझ लिया

है कि ये सब दलितों की शक्ति को कमज़ोर करने के उपाय हैं। दलित मज़दूर बसेसर ने भी शिवराजसिंह के दोहरे मुँह को पहचान लिया है। नाटककार बसेसर द्वारा शिवराज सिंह के छद्म नेतृत्व की पोल खोलकर अपने अधिकारों से वंचित दलितों में जागृति पैदा करने की कोशिश करते हैं - ""हाथी के दाँत खाने के अलग और दिखाने के अलग होते हैं। यह मज़दूर नेता भी उनमें से ही है। सहर में जाके कुछ और, यहाँ कुछ और।""2 किशन गाँव से शहर पहुँचकर शिवराज के छद्म नेतृत्व का पर्दाफाश करता है। वह शहर के कारखाने के मज़दूरों से शिवराजसिंह के संबन्ध में कहता है - ""इस मज़दूर नेता कू अच्छी तरह पिछाणता हूँ। इसके दो चेहरे हैं। एक जिसे तुम देख रे हो, दुसरा जो मैंन्ने देक्खा है।""3

दलित मज़दूरों ने समझ लिया कि शिवराजसिंह मज़दूरों के हित केलिए नहीं, अपितुउनके विकास के मार्ग में बाधा के रूप में खड़े होकर उनका शोषण करता है। अपने अधिकारों के प्रति नवीन चेतना से जागृत होकर किशन शिवराजसिंह के विरुद्ध यों आवाज़ उठाता है - ""यह प्यारा नेता सिबराजसिंह म्हारे ही गाँव का रहनेवाला है। अभी पिछले दिनों हमने गाँव में मज़दूरी बढ़ाने केलिए हड़ताल की थी, जो सांतिपूर्वक चल रही थी। इस सिबराज ने निहत्थे दलितों पर लाठियों से हमला किया और गरीब दलितों को बुरी तरह पीटा। मैं पूछता हूँ उनका क्या कसूर था।""4 इस प्रकार वाल्मीकिजी ने शिवराजसिंह के दोहरे व्यक्तित्व के चित्रण के द्वारा दलितों में नवीन चेतना जगाकर अपने अधिकारों केलिए संघर्ष करने की प्रेरणा देने का सफल प्रयास ही किया है।

समाज के उच्चवर्ग के लोग हमेशा निम्नवर्ग के लोगों को अपना गुलाम बनाकर उनकी एकता की शक्ति को खतम करना चाहते थे। वे दलितों के बीच अंतर्विरोध पैदा करके भिन्नता लाने की कोशिश भी करते थे। लेकिन अब उनके इन षड्यन्त्रों को दलित लोग पहचानते हैं और इसका विरोध भी करते हैं। इसका स्पष्ट चित्र वाल्मीकिजी ने "दो चेहरे" नाटक में खींचा है। अपने अधिकारों केलिए सवर्णों के खिलाफ दलित जो आवाज़ उठाते हैं, यह शिवराज जैसे नेताओं को बर्दाश्त नहीं है। वह और सवर्ण किसान किसी न किसी प्रकार से दलितों में भिन्नता पैदा करके उनके आत्मविश्वास को नष्ट करना चाहते हैं। लेकिन दलितों के बीच हड़ताल के अगले कदम के संबन्ध में धर्मपाल के नेतृत्व में चर्चा हुई। उसका पुरा विश्वास है कि एकता के साथ दलित अपने अधिकारों केलिए लडें तो इस लड़ाई में उनकी जीत होगी। वह दलित मज़दूरों को शोषण एवं दमन के विरुद्ध एकता के साथ लड़ने का आह्वान यों देता है - ""तुम लोग फिकर मत करो.... जब तक हम में एकता मज़बूत है, कोई भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा।""5

किशन इस नाटक में ऐसा पात्र है जो दलितों के बीच की एकता को बनाए रखने की बात पर ज़ोर देकर मज़दूरों को जागृत करने का परिश्रम करता है। वह समाज में एकता एवं समता का संदेश फैलाता है। मज़दूरों के बीच एकता बनाए रखने के संबन्ध में उसका मंतव्य इस प्रकार है - ""आप सब की एकता बड़ी चीज़ है। आगे भी यह एकता कू बणाये रक्खें। किसी के बहकावे में आकर इसे टूटने न दें। यह जो संघर्ष का रास्ता आप लोगों ने पकड़ा है, उस में सफलता ज़रूर मिलेगा।""6 किशन परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़े हुए अछूतों को नयी दिशा प्रदान करने की कोशिश भी करता है। इसके द्वारा गाँव के अन्य दलित मज़दूर भी प्रधानजी के खिलाफ सिर उठाकर खड़े रहने की शक्ति प्राप्त कर चुके हैं। प्रधानजी के शब्दों से यह व्यक्त होता है - ""कल तक हमारे सामने झुक के चलनेवाले, आज हमारे खिलाफ नारे लगा रहे हैं।""7

इस नाटक में शिवराजसिंह के व्यवहार के द्वारा वाल्मीकिजी यह व्यक्त करना चाहते हैं कि मज़दूर संगठन के नेता भी दलितों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार करके उनका शोषण करते हैं। वे दलितों से झूठी सहानुभूति दिखाते हैं। उनका लक्ष्य समाजसेवा नहीं, अपितु गरीब दलित कहीं बढ़ा न जाए और उनका विकास न हो जाए। आर्थिक अभाव के कारण भी दलित लोग सामाजिक धरातल पर सुरक्षित नहीं है। इसलिए गरीब दलितों को उच्चवर्ग के लोगों से कर्ज़ लेना पड़ता है और उसी कर्ज़ में जीवन भर उन लोगों के अधीन में रहना पड़ता है। गाँव के दलित मज़दूर बजरंगी और उसकी बेटी संतो के साथ कर्ज़ के नाम पर और हड़ताल तोड़ने के उद्देश्य से शिवराज अमानवीय व्यवहार करता है। लेकिन संतो इस पर अपना विरोध यों प्रकट करती है - ""किसी कमज़ोर के साथ ज़ोर - ज़बर्दस्ती करके अपनी हवस पूरी कर लेना बहादूरी नहीं, कमीनापन कायरता है।""8 शिवराजसिंह के सामंती विचारों और झूठी सहानुभीति को संतो पहचान लेती है। वह धीरता के साथ अन्याय एवं शोषण का सामना करती है। संतो के प्रतिरोध का स्वर यों है - ""मैं कहती हूँ चले जाओ यहाँ से.... मुझे हाथ लगाने की कोशिश भी की तो अजाम बहुत

बुरा होगा।""9 यहाँ वाल्मीकिजी व्यक्त करते करते हैं कि शोषण, अत्याचार और अधिकारों के हनन के विरुद्ध आवाज़ उठाने का साहस अब दलितों में आ गया है। संतो शिवराज के षड्यंत्रों के सामने पराजित नहीं होती है। उसके शब्दों में भारत के दलित समाज की सभी नारियों का स्वर सुनायी पडता है।

दलितों को शोषण के साथ सामंती उत्पीड़न का शिकार भी होना पड़ता था। गरीब दलितों के मेहनत से उच्चवर्ग अपना जीवन सुरक्षित रखते हैं। लेकिन सभी सुख सुविधाओं से दलित लोग वंचित रहते हैं। दलित मज़दूर बसेसर के माध्यम से लेखक ने शोषण की यथार्थ स्थिति का पर्दाफाश किया है - ""हज़ारों साल इनके सामणे झुके - झुके तो म्हारी कमर टेढी हो गयी है।""10 यहाँ दलितों के प्रतिरोध का स्वर भी मुखरित हुआ है। शिवराज सिंह के द्वारा संतों और बजरंगी को बुरे अनुभाव हुए थे। बसेसर इसका बदला लेना चाहता है और संतों से कहता है ""हम लोग कल तक ज़रूर मुर्दा थे, पर आज नहीं है। हम यह जाग चुके हैं कि जीना है तो डर कर नहीं, सीना तनाकर जीयेंगे।""11 यहाँ वाल्मीकिजी यह व्यक्त करते हैं कि सालों से सवर्णों के उत्पीडन एवं शोषण को झेलनेवाले दलित अब जागृत होकर अपने अधिकारों केलिए साहस के साथ लड़ने को तैयर हो गये हैं।

इसप्रकार कहा जा सकता है कि शिवराजसिंह के द्वारा भारतीय समाज- व्यवस्था के दोहरे चरित्र को सीधे और सहज तरीके से "दो चेहरे" नाटक में व्यक्त किया गया है। इस में वाल्मीकिजी ने अज्ञान और अंधकार में डूबे हुए दलितों को जागृति एवं स्वतंत्रता का संदेश देकर निडरता एवं आत्मविश्वास के साथ अपने अधिकारों केलिए लड़ने का आह्वान किया है। उन्होंने इसके द्वारा जातिगत भेदभाव से भरी सामाजिक व्यवस्था को तोड़कर समानता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व की भावना जागृत करने की कोशिश भी की है। अतः उन्होंने उपेक्षित एवं मानवाधिकार से वंचित दलितों को मुख्यधारा में लाने का अथक प्रयास ही किया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. जयराम उपाध्याय, मानव अधिकार, पृ 16

2. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दो चेहरे, पृ 34

3. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दो चेहरे, पृ 45

4. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दो चेहरे, पृ 46

5. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दो चेहरे, पृ 36

6. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दो चेहर्र, पृ 39

7. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दो चेहर्र, पृ 20

8. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दो चेहर्र, पृ 29

9. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दो चेहर्र, पृ 29

10. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दो चेहर्र, पृ 31

11. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दो चेहर्र, पृ 33